>

Title: Need to take action against plagiarism in the country.

श्री हर्ष वर्धन (महाराजगंज, उ.प्र.): देश-विदेश के लेखकों की पुस्तकों की सामग्री की नकल कर अपने नाम से पुस्तक प्रकाशित कराने के अनेकों मामले वर्तमान में प्रकाश में आए हैं। इस संबंध में निम्न प्रकरणों पर मैं तथ्यों की जांच चाहता हूं :-

1. क्या अवधेश सिंह विश्वविद्यालय, रीवा की पुस्तक "बी.जे.एम.सी.-600" के अध्याय - "फिल्मों का इतिहास" एवं "संचार के सात सोपान" नामक पुस्तक का अध्याय-7 के अंतर्गत लिखित सामग्री एक है।

2. क्या पुस्तक "संचार माध्यमों का प्रभाव" की सामग्री के आधार पर किसी अन्य व्यक्ति द्वारा डी.िलट. शोध थीसिस लिखी गई और बाद में उसे "पत्रकारिता एवं विकास संचार" पुस्तक के रूप में छपवा लिया गया।

मैंने मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भी इन प्रकरणों से अवगत कराया था। ऐसे मामलों में आरोपी को सजा दिलाना अत्यंत दुष्कर होता है।

मेरी मांग है कि नकल कर लेखक बन शैक्षणिक व अन्य संस्थाओं में उच्च पदों पर पहुंचे व्यक्तियों को प्रथम दृष्टि में दोषी पाए जाने पर तत्काल पदच्युत कर दिया जाए एवं आरोप सिद्ध होने पर उनको संबंधित पुस्तक के आधार पर प्राप्त नौकरी एवं पदोन्नति के दौरान मिलने वाला वेतन एवं अन्य देय भत्तों की वसूली की जाए।